❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली

प्रत्येक आर्यजन का पंजीकरण अनिवार्य

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025 दिल्ली कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महासम्मेलन में भाग लेने वाले आर्यजन कृपया पंजीकरण हेतु लॉगइन करें–

www.aryamahasammenan.com

पंजीकरण सम्बन्धी आवश्यक निर्देश पृष्ठ 7 पर प्रकाशित किए गए हैं।

वर्ष 48, अंक 46 | एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 8 सितम्बर, 2025 से रविवार 14 सितम्बर, 2025

विक्रमी सम्वत् 2082 | सृष्टि सम्वत् 1960853126

दयानन्दाब्द : 202 | पृष्ठ : 8

वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150

ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों का समापन

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025

स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-110085

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025 दिल्ली कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

आर्य समाज 150

विश्वभर में अपार उत्साह : सम्पूर्ण भारत व विदेशों से आर्यजनों के पहुंचने की सूचनाएं

आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि मंडल ने की प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से भेंट

प्रधानमन्त्री जी करेंगे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन

नई दिल्ली में 30 अक्टूबर से 2 नंवबर 2025 तक आयोजित होने वाले आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में पधारने का निमन्त्रण देने के लिए आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि मंडल ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से भेंट की। प्रतिनिधि मंडल में डॉ.देवव्रत आचार्य जी (राज्यपाल, गुजरात), श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी (अध्यक्ष, ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति एवं चेयरमैन जेबीएम ग्रुप), पद्मश्री पूनम सूरी जी (अध्यक्ष, डीएवी कॉलेज मैनेजिंग कमेटी), श्री प्रकाश आर्य जी (प्रधान, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सदस्य, सार्वदेशिक सभा), श्री धर्मपाल आर्य जी (महासम्मेलन संयोजक, एवं प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री विनय आर्य जी (महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), डॉ राजेंद्र विद्यालंकार जी (प्रतिनिधि, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा), श्री भुवनेश खोसला जी (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका), श्री हरिदेव रामधनी जी (आर्य सभा मॉरीशस) सम्मिलित रहे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200 वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों के भव्य समापन समारोह आर्य समाज सार्द्ध शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 के निमंत्रण देने की श्रृंखला देश-विदेश में लगातार गतिशील है। इस क्रम में भारत राष्ट्र के यशस्वी प्रधनमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को निमंत्रण देने के लिए आर्य समाज के प्रतिनिधि मंडल ने शिष्टाचार भेंट कर उन्हें महासम्मेलन में पधारने हेतु सादर आमंत्रण दिया। यह सर्वविदित ही है कि माननीय प्रधनमंत्री जी ने 12 फरवरी 2023 को इंदिरा गांधी इनडोर स्टेडियम में दो वर्षीय विश्व व्यापी आयोजनों का भव्य शुभारंभ किया था। इस अवसर पर आपने आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी के महान परोपकारी सेवा कार्यों तथा आर्यसमाज के सिद्धांत, मान्यता व बलिदानी परंपराओं की प्रशंसा करते हुए सभी महापुरुषों को स्मरण किया था। आज जब ज्ञान ज्योति महोत्सव के दो वर्षीय आयोजनों का समापन समारोह अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासमेल्लन के रूप में दिल्ली में हो रहा है, तब आर्यसमाज द्वारा प्रधानमंत्री जी को निमंत्रण देते हुए आर्यसमाज के प्रतिनिधि मंडल एवं स्वयं प्रधानमंत्री जी ने अत्यंत हर्ष का अनुभव किया।

सुन्दर व्यवस्था हेतु सम्मेलन में आने से पूर्व समस्त आर्यजन अपना पंजीकरण अवश्य करा लेवें।
आगन्तुक महानुभावों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से की जाएगी।
पंजीकरण हेतु लॉगइन करें-www.aryamahasammelan.com

देववाणी-संस्कृत

मैं तुझे चाहता हूँ

वेद-स्वाध्याय

आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच्चित्सधस्थात्। अग्ने त्वां कामया गिरा।।
-ऋ० 8।11।7; साम० पू० 1।1।1।8
ऋषिः-वत्सः काण्वः।। देवता-अग्निः।। छन्दः -निचृद्गायत्री।।

शब्दार्थ- वत्सः= मैं वत्स **ते मनः**= तेरे मन को **परमात् चित्**= अतिः-उत्कृष्ट **सधस्थात्**= सहस्थान से **आ यतम्**= वश करता हूँ, प्राप्त करता हूँ, **अग्ने**= हे परमेश्वर! मैं **त्वाम्**=तुझे **गिरा**=वाणी द्वारा **कामये**=चाहता हूँ-मिलना चाहता हूँ।

विनय- हे परमात्मन्! तुम्हारा स्थान बहुत ऊँचा है। तुम्हारे उत्कृष्ट पद को मैं कैसे पाऊँ? तुम जिस दिव्यधाम में रहते हो, जिस सर्वशक्तिमय, सर्वज्ञानमय, परमानन्दमय लोक में तुम्हारा निवास है, उस परम स्थान तक मैं अल्पज्ञ, अल्पशक्ति, तुच्छ जीव कैसे पहुँच सकता हूँ? परन्तु नहीं, मैं भी अन्ततः तुम्हारा पुत्र हूँ, वत्स हूँ, प्यारा अमृत-आत्मज हूँ। मैं चाहे कैसा ही न व पतित होऊँ पर स्वरूपतः अमर, चिन्मय आत्मा हूँ, अतः तुम्हारा धाम मेरा ही धाम है, तुम्हारा ऊँचे-से-ऊँचा स्थान मेरा सहस्थान है, 'सधस्थ' है। तुम्हारे दिव्य-से-दिव्य स्थान से तुम्हारे पुत्र का अधिकार कैसे हट सकता है! मैं तुम्हें अपने प्रेम द्वारा तुम्हारे दूर-से-दूर, ऊँचे पद से खींच लाऊँगा। हे पितः! मुझे सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ बनने की क्या आवश्यकता है? मैं तो अपने अगाध प्रेम से, अपनी अनन्य भक्ति से तेरे मन को काबू कर लूँगा, तेरे मन को पा लूँगा। फिर और क्या चाहिए? हे मेरे जीवन! मैं तुम्हें अपनी सर्वशक्ति से चाह रहा हूँ, कामना कर रहा हूँ। आत्मा में तुमने जो वाणी नाम्नी आत्मशक्ति रक्खी है, मैं उसकी सम्पूर्ण शक्ति में तुम्हें ही खींच रहा हूँ। मैं अपनी आन्तर और बाह्य वाणी समस्त शक्ति को तुम्हारे मिलन के लिए ही व्यय कर हरा हूँ। मन में मेरी ही चाह है, मन में तेरा ही जाप है, तेरी ही रटन है; 'वैखरी' वाणी में भी तेरा ही नाम है, तेरा स्तोत्रपाठ ; शरीर की चेष्टाओं से भी जो कुमछ अभिव्यक्त होता है वह तेरी लगन है, तेरे पाने की तड़प है। क्या तू अब भी न मिलेगा? मैं तेरा वत्स इस तरह से, हे पितः! तेरे मन को हर ही लूँगा। तू चाहे कितने ऊँचे स्थान का वासी हो, पर तेरे मन को जीत के ही छोड़ूँगा। मेरो प्रेम, मेरी भक्ति तेरे मन को खींच लेगी और फिर तेरे मन को, तेरे प्रेम व वात्सल्य को, मुझे अपनाना होगा।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 का भव्य, विशाल एवं विराट आयोजन

एक रूपीय यज्ञ से आलोकित हो उठेगा महासम्मेलन का आयोजन स्थल स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, दिल्ली

संपूर्ण संसार यज्ञमय है। यज्ञ का अर्थ है- कुछ नया निर्मित करना। ईश्वर के नियम और व्यवस्था के अनुसार समस्त ब्रह्मांड में निरंतर नूतनता के साथ अनवरत अखंड यज्ञ हो रहा है। सूर्य की किरणें, चंद्रमा की चांदनी, नदियों-झरनों का जल प्रवाह, हवा की गतिशीलता, पेड़-पौधों पर रंग-बिरंगे फूलों का खिलना, हंसना, मुस्कुराना, रसीले फलों का लगना, औषधियों-वनस्पतियों का नित नया निर्माण, ये सब यज्ञ के ही विभिन्न रूप हैं। ईश्वर द्वारा संचालित यह अखंड यज्ञ मानवमात्र को भी यज्ञमय जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करता है।

ऋषि, राष्ट्र, ईश्वर भक्ति का नया सवेरा लाना है।
पाखंडों के षड्यंत्रों को जड़ से हमें मिटाना है।।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की आज्ञा के अनुसार जैसे आर्य समाज वेद के पढ़ने-पढ़ाने को अपना परम धर्म मानता है, वैसे ही यज्ञ के करने-कराने को भी पिछले 150 वर्षो से अपना परम कर्तव्य मानता आ रहा है। आर्य समाज अग्निहोत्र के साथ ही मानव सेवा और परोपकार को भी यज्ञ का ही विशेष रूप मानता आया है, इस क्रम में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के समस्त कार्यक्रम भी अपने आप में यज्ञ का ही रूप हैं। किन्तु इस चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में देश के कोने-कोने से और विदेशों से लाखों आर्य नर-नारी, बच्चे, युवा और बुजुर्ग पधारेंगे तो इस अवसर पर अपना दैनिक यज्ञ भी अवश्य करेंगे, इसके लिए सम्मेलन स्थल पर वृहद यज्ञशाला का निर्माण होगा, जहां आर्य समाज के अधिकारी, आर्य नेता, राजनेता, उद्योगपति, और समस्त अतिथि गण आर्य विद्वानों, संन्यासी वृंदों के ब्रह्मत्व में आहुति देकर विश्व कल्याण की कामना और प्रार्थना करेंगे और इसके साथ ही सर्वकालिक यज्ञ भी चलता रहेगा, जिसमें सभी लोग अपने आगमन के समयानुसार सुविधा से आहुति देकर पुण्य अर्जित करते रहेंगे। कितना सुंदर दृश्य होगा जब हजारों की संख्या में आर्य नर नारी गले में पीत वस्त्र डालकर, सिर पर केसरिया पगड़ी पहनकर, हाथ में ओम ध्वज लेकर वेद की ज्योति जलती रहे, ओम् का झंडा ऊंचा रहे, के गगन भेदी उदघोष करते आ रहे हैं, गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए अपने परिवार जनों, सगे संबंधियों के साथ आहुति दे रहे हैं, आगे बढ़ रहे हैं, फिर दूसरा जत्था आ रहा है, वह भजन गाता हुआ आ रहा है "होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से, जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान यज्ञ से" वेद मंत्रों का निरन्तर पाठ चल रहा है, गुरुकुलों के ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी वेद पाठ कर रहे हैं, आचार्यगण, संन्यासी गण और , ब्रह्मा अपने आसन पर विराजमान हैं, सबको आशीर्वाद दे रहे हैं, चारों तरफ अत्यंत उत्साह का वातावरण बना हुआ है।

पूर्व अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की भांति इस अवसर पर भी एक रुपीय यज्ञ का वृहद आयोजन होगा, जिसमें हजारों की संख्या में गुरुकुलों, कन्या गुरुकुलों, आर्य विद्यालयों, अन्य अनेक शिक्षण संस्थानों के छात्र, छात्राओं के साथ-साथ ही उन स्त्री पुरुषों की सहभागिता होगी जो यज्ञ के विषय में पूरी तरह अनभिज्ञ थे, इन लोगों को यज्ञ करने, यज्ञ में आहुति देने से दूर रखा गया था, ये वे लोग हैं जो दिल्ली एनसीआर की झुग्गियों में रहते हैं, जिन्हें लोग उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, पौराणिक बंधु जिनके यहां यज्ञ आदि कराने से परहेज करते हैं, क्योंकि उन्हें तो यज्ञ कराने पर मोटी दान दक्षिणा चाहिए, और यहां यज्ञ कराने पर तो उनको वह मिलनी नहीं है, तो फिर वे यहां क्यों कराएं हवन, क्यों कराएं गरीबों के संस्कार? इसके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के समस्त कार्यक्रम भी अपने आप में यज्ञ का ही रूप हैं। किन्तु इस चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में देश के कोने-कोने से और विदेशों से लाखों आर्य नर-नारी, बच्चे, युवा और बुजुर्ग पधारेंगे तो इस अवसर पर अपना दैनिक यज्ञ भी अवश्य करेंगे, इसके लिए सम्मेलन स्थल पर वृहद यज्ञशाला का निर्माण होगा, जहां आर्य समाज के अधिकारी, आर्य नेता, राजनेता, उद्योगपति, और समस्त अतिथि गण आर्य विद्वानों, संन्यासी वृंदों के ब्रह्मत्व में आहुति देकर विश्व कल्याण की कामना और प्रार्थना करेंगे और इसके साथ ही सर्वकालिक यज्ञ भी चलता रहेगा, जिसमें सभी लोग अपने आगमन के समयानुसार सुविधा से आहुति देकर पुण्य अर्जित करते रहेंगे। कितना सुंदर दृश्य होगा जब हजारों की संख्या में आर्य नर नारी गले में पीत वस्त्र डालकर, सिर पर केसरिया पगड़ी पहनकर, हाथ में ओम ध्वज लेकर वेद की ज्योति जलती रहे, ओम का झंडा ऊंचा रहे, के गगन भेदी उदघोष करते आ रहे हैं, गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए अपने परिवार जनों, सगे संबंधियों के साथ आहुति दे रहे हैं, आगे बढ़ रहे हैं, फिर दूसरा जत्था आ रहा है, वह भजन गाता हुआ आ रहा है "होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से, जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान यज्ञ से" वेद मंत्रों का निरन्तर पाठ चल रहा है, गुरुकुलों के ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी वेद पाठ कर रहे हैं, आचार्यगण, संन्यासी गण और ब्रह्मा अपने आसन पर विराजमान हैं, सबको आशीर्वाद दे रहे हैं, चारों तरफ अत्यंत उत्साह का वातावरण बना हुआ है.........

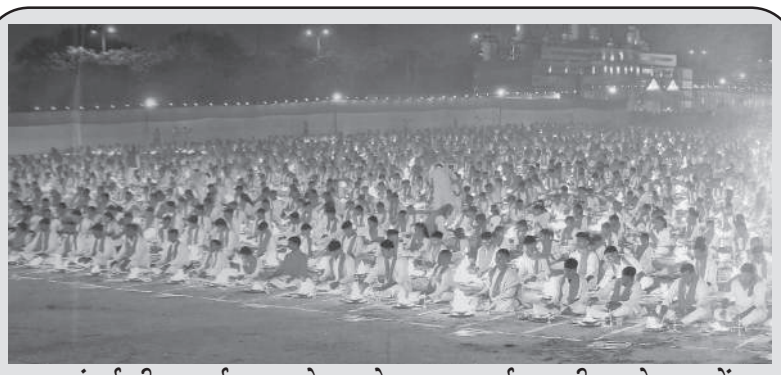

द्वारा संचालित घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ योजना का विस्तार करते हुए झुग्गी-झोपड़ियों में जाकर यज्ञ करना, उनके बच्चों के नामकरण, मुंडन, विवाह आदि संस्कार कराना, शांति यज्ञ और प्रार्थना सभा का आयोजन करना आरंभ किया, और इससे भी आगे अगर किसी के पास अभाव है तो सभा की ओर से घी, सामग्री, समिधा, हवनकुंड, यज्ञ के बर्तन आदि सब ले जाकर हवन और संस्कार कराना और उनको वैदिक साहित्य भी भेंट करना शुरू किया, परिणाम यह हुआ कि आज हजारों झुग्गियों में रहने वाले लोग याज्ञिक बन गए, पूरे परिवार और बच्चे मिलकर यज्ञ कराने लगे, इससे भी आगे अब उनकी महिलाएं, बेटियां स्वयं हवन भी कराने लगी हैं, वे यज्ञ की पंडित बन गई है, मंत्रों का सुंदर पाठ करती हैं, यज्ञ प्रार्थना और भजन गाती हैं, एक दूसरे को शुभकामनाएं और आशीर्वाद देती हैं। आर्य समाज इन झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोगों की बस्तियों जय-जय कालोनी कहता है।

शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य महासम्मेलन चलो–आओ आर्यो दिल्ली

चलो–चलो ऐ दुनियाँ वालों सुनो बात अनमोली ।
आर्य महासम्मेलन चलो, आओ आर्यो दिल्ली ।।

(1)

आर्यसमाज की शक्ति दिखा दो रोहिणी के पार्क में।
प्रान्तीय सभा की शक्ति दिखाओ, आर्य महासम्मेलन में।।
सभी आर्यजन इकट्ठे होवें ओ३म् ध्वजा के तल में।
बिखरे हुए हैं मोती सारे आर्योद्देश्य माला में।।
लाखों की संख्या में पहुंचो आओ आर्यो दिल्ली....

(2)

आपके आने से दिल्ली में आर्यो की शक्ति बढ़ेगी।
नगर ग्राम पंचायत में आर्यो वेद की ज्योति जलेगी ।।
ऋषि दयानन्द के कार्यों में जनता की भक्ति बढ़ेगी।
अज्ञान अविद्या पाखण्डों की जड़ से नींव हिलेगी।।
आर्यसमाज के वीरों प्यारो निकली आर्यों को टोली .....

(3)

देश–विदेशों के आर्य नेता आर्यसम्मेलन में आयेंगे।
वेद शास्त्र, व्याकरण के ज्ञाता, विद्वानों को वहां पायेंगे।
ज्ञानी, विज्ञानी, योगी, संन्यासी, ब्रह्मचारी शास्त्र सुनाएंगे।
आर्य वीर और वीरांगनाएं मिलकर कौशल दिखलाएंगे–
यज्ञ की ज्योति जलाएगी यजमान पुरोहितों की टोली।

भजनोपदेशक: पं. अशोक आचार्य (ग्वालियर), मो. 9425418855

ओ३म्

आर्य समाज सार्द्ध शताब्दी
अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, 2025

30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025

स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर 10, नई दिल्ली 110085

www.aryamahasammelan.com

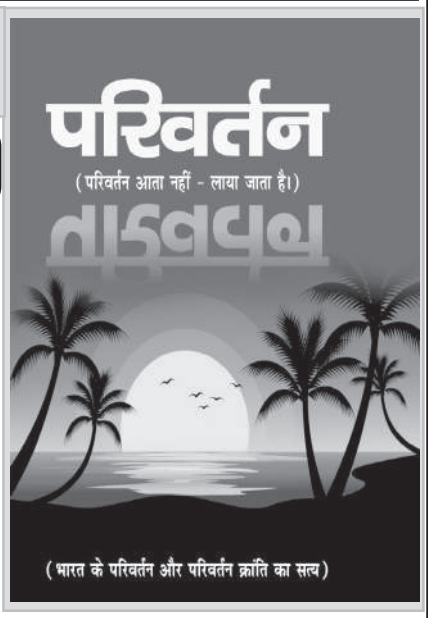

वैदिक साहित्य के प्रकाशकों, लेखकों, साहित्यकारों, संपादकों, पत्रकारों, बाल साहित्यकारों तथा संस्थाओं के लिए शुभ सूचना

सार्द्ध शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 के अंतर्गत लगने वाले पुस्तक बाजार में इस बार खुले लेखक मंच की स्थापना की जा रही है। पुस्तक विक्रेता, उपदेशक, साहित्यकार, पत्रकार, लेखक वैदिक साहित्य पर आधारित गोष्ठियां, आपसी चर्चाएँ, विचार विमर्श एवं भावी योजनाओं पर मंथन एवं कोई वैदिक साहित्य के उन्नयन के लिए कोई भी इस मंच का प्रयोग कर सकते हैं। इस मंच पर साधारण शुल्क देकर निर्धारित समय के लिए प्रकाशक अपनी नई पुस्तकों का लोकार्पण व चर्चा कर सकते हैं।

आपसे निवेदन है कि शीघ्र ऐसे किसी भी आयोजन की सूचना आयोजकों को निम्न नंबर पर सूचित कर अपना दिन और समय आरक्षित करवा लें।

संपर्क सूत्रः
अजय आर्य (9810064035) से सम्पर्क करें

● ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति ● सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ● दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001

परिवर्तन : आता नहीं है – लाया जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी : एक संक्षिप्त जीवन परिचय

महर्षि दयानन्द जी का आगमन काल और उनके कार्य

गतांक से आगे –

अब अगले भाग में हम तत्कालीन परिस्थितियों का और महर्षि दयानन्द जी द्वारा उन परिस्थितियों को देखकर जो परिवर्तन क्रान्ति आरम्भ की उसको विषय अनुसार जानेंगे। ऐसा हम नहीं कहेंगे कि महर्षि के आगमन से पूर्व इन समस्याओं पर किसी का ध्यान गया ही नहीं, ध्यान गया भी, कार्य करा भी, पर सबके प्रभाव और आधार अलग–अलग थे। किसी ने कोई एक विषय हुआ, किसी ने कोई विषय। अनेक विषयों पर सामाजिकता के नाते कहने से भी अनेक महानुभाव बचते रहे। किन्तु मानवमात्र को केन्द्र में रखकर, केवल वेद और सत्य को आधार मानकर विरोध और प्रतिक्रिया की चिन्ता किए बिना मान–अपमान, हानि–लाभ को सोचे बिना निर्भीकता से सारी बात तर्क के आधार पर कहने की क्षमता यदि आप एक साथ किसी में पाएंगे तो वे निश्चित रूप से महर्षि दयानन्द ही होंगे ओर को नहीं।

पाठक खुद देखेंगे कि दयानन्द ने व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक जीवन, धार्मिक जीवन तथा राजनीतिक जीवन के प्रत्येक पहलू पर अपने निर्लेप विचार रखे हैं। शायद ही कोई पक्ष ऐसा हो जिस पर दयानन्द ने अपने वेद अनुकूल विचारों से सबको अवगत न कराया हो।

आने वाले भाग में आप स्वयं अनुभव करेंगे कि उनके द्वारा हर विषय पर उठाई गई समस्या के समाधान कोई किस प्रकार लोगों ने अपनाया, उनके कार्यों, प्रतिभा, तेजस्विता, ओजस्विता को देखकर हम आज भी उसको अनुभव करने की क्षमता तो रखते ही हैं।

आर्यसमाज की स्थापना का भारत की राजनैतिक और सामाजिक स्थिति पर प्रभाव महर्षि दयानन्द जी को कार्यक्षेत्र में उतरने के पश्चात् न जाने कितनी बार मारने के प्रयत्न हुए, जहर दिए गए, तलवारें दिखाई गई, मारने के लिए पहलवान भेजे गए, पर दयानन्द का ईश्वर पर अटूट विश्वास उनको मजबूती दिए रहा। किन्तु दयानन्द जानते थे मानव शरीर है एक दिन जाना ही है, अतः उनके विचारों को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें कुछ व्यवस्था करनी चाहिए। पहले वे उस समय चल रही समाज सुधारक संस्थाओं को इसके लिए उपयोगी विचारते रहे किन्तु उनको ये विश्वास न हो सका कि ये संस्थाएं वेद को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार करने के लिए कितनी मजबूत रहेंगी? अतः उन्होंने परमपिता परमात्मा की आज्ञा समझकर उन श्रेष्ठ पुरुषों के संगठन के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया जो उनके दिखाए वेद प्रचार को आगे बढ़ा सके। अतः उन्होंने अपने कार्यों को आगे चलाते रहने के लिए 10 अप्रैल 1875 को मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की, किन्तु खुद उसके प्रधान बनना स्वीकार न किया।

लोकतन्त्र को आर्यसमाज के नियमों में अपनाने वाली संस्था सर्वप्रथम आर्यसमाज ही थी। आर्यसमाज ने अपने स्थापनाकाल से ही ऋषि दयानन्द के एक–एक कार्य को बहुत ही मजबूती से करना शुरू किया और शीघ्र ही ये संगठन सारे भारत में फैल गया। बिना साधन, बिना धन, बिना सरकारी सहायता के यह महान् संस्था शीघ्र ही दूर विदेशों में भी फैल गई। बड़े–बड़े स्कूल, कॉलेज, बड़े–बड़े गुरुकुल, अनाथालय, अस्पताल, कन्या आश्रम, विकलांग आश्रम आदि आर्यसमाज ने बनाए। अगर मूल परिवर्तन की क्रान्ति आरम्भ करने का श्रेय इतिहास ऋर्षि दयानन्द सरस्वती जी को देगा तो इस चिंगारी को सारे भारत में अग्नि की भांति फैलाने का श्रेय निश्चित रूप से तथ्यों के आधार पर आर्यसमाज को ही देना होगा अन्य किसी को नहीं। आने वाले पन्नों में आप ऋषि दयानन्द की सोच और कार्यों के साथ–साथ आर्यसमाज के कार्यों को भी पढ़ेंगे क्योंकि आर्यसमाज के कार्यों को दयानन्द से अलग करके देखा जाना सम्भव नहीं।

राजा राममोहन राय वाले सुधार को लोग अंग्रेजों की शिक्षा की देन मानते थे। पर ऋषि दयानन्द ने परिवर्तन क्रान्ति और सुधार कार्यों की घोषणा को वेदादि वैदिक ग्रंथों से सिद्ध करके खुली घोषणा की। हम क्रमशः उनके कार्यों को देखने का प्रयत्न करेंगे। हम विचारपूर्वक देखेंगे कि किस प्रकार महर्षि दयानन्द ने हर उस विषय को समझा, जो भारत के वर्तमान दुरः अवस्था के लिए दोषी थी, उसको उसके प्राचीन वैभवकाल के स्वरूप में

पहुंचाना ही उनको आवश्यक लगा। यह जंग लगे लोहे पर से जंग उतारना और साफ करके उस पर पुनः पॉलिस कर देने जैसा था। पर स्वामीजी ने एक–एक विषय पर विचार खुलकर रखे, लिखा भी, समझाया भी और जरूरत पड़ी तो शास्त्रार्थ भी किए। एक–एक विषय पर कार्य शुरू हुआ, जितना कार्य बढ़ा, उतने ही विरोधी भी, शायद विरोध ही कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक बन गया। सफलता मिलती गई, निःस्वार्थ कार्य जो था !

आप स्वयं एक–एक विषय की तत्कालीन स्थिति, उस पर महर्षि के विचार और उनके अनुयायियों द्वारा किए गए कार्य एवं उनका समाज पर पड़े प्रभाव जानेंगे और इसी क्रम में अब हम महर्षि के उन कार्यों को देखेंगे जिनको जानने का अवसर शायद अभी तक हमें पूरी तौर पर न मिल सका हो।

– क्रमशः

– शेष पृष्ठ

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

8 सितम्बर, 2025
से
14 सितम्बर, 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों के समापन समारोह

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली–2025

एक रूपीय विराट यज्ञ के आयोजन हेतु विभिन्न स्कूलों, कालोनियों में यज्ञ प्रशिक्षण

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की आज्ञा के अनुसार जैसे आर्य समाज वेद के पढ़ने- पढ़ाने को अपना परम धर्म मानता है, वैसे ही यज्ञ के करने-कराने को भी पिछले 150 वर्षों से अपना परम कर्तव्य मानता आ रहा है। आर्य समाज अग्निहोत्र के साथ ही मानव सेवा और परोपकार को भी यज्ञ का ही विशेष रूप मानता आया है, इस क्रम में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के समस्त कार्यक्रम भी अपने आप में यज्ञ का ही रूप हैं। किन्तु पूर्व अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की भांति इस महा सम्मेलन में भी वृहद एक रूपीय यज्ञ का विशाल आयोजन होगा, इसके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के धर्माचार्य, संवर्धकों ने यज्ञ प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन पिछले कई महीनो से शुरू किया हुआ है, जिसमें आर्य विद्यालयों में जा-जाकर एक रूपीय यज्ञ की विधि सिखाई जा रही है। जिससे जब यज्ञ का आयोजन हो तो उस समय सभी यज्ञ कर्ताओं की वेशभूषा, सभी का कतारबद्ध बैठने का तरीका, आचमन, प्रार्थना उपासना मंत्रों का पाठ, अग्न्याधन, समिधा दान, घी और सामग्री चढ़ाने की विधि सबका एक ही रूप होवे, सब लोग यज्ञ करते हुए एक समान ही व्यवहार करें, सबका एक ही लक्ष्य हो केवल और केवल यज्ञ करना, यज्ञ करना और यज्ञ करना। तभी एक रूपीय का प्रेरक स्वरूप बनेगा, तभी यह यज्ञ एक प्रेरणा का इतिहास बनेगा। यहां प्रस्तुत है यज्ञ प्रशिक्षण शिविरों की झलकियां

अतः आइए अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आयोजित होने वाले एक रूपीय विशाल यज्ञ के हम साक्षी अवश्य बनें, किन्तु इसके साथ ही सपरिवार, इष्टमित्रों सहित सर्वकालिक यज्ञशाला में विद्वानों के ब्रह्मत्व में यज्ञ में आहुति दें, यज्ञ का दूसरा चरण विद्वानों की संगति करें, और अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025, दिल्ली के आयोजन में दान देकर पुण्य अर्जित करें।

महर्षि दयानंद पब्लिक स्कूल, शादी खामपुर

आर्य पब्लिक स्कूल, मॉडल बस्ती

आर्य पब्लिक स्कूल

रतनचंद आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर

दयानंद विहार जय-जय कॉलोनी

शिव विहार जय-जय कॉलोनी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों का समापन समारोह

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2025

दिल्ली एवं उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में दिए गए आमन्त्रण

आर्य समाज डी ब्लॉक जनकपुरी

आर्य समाज भरूआ, सुमेरपुर जनपद हमीरपुर, उ.प्र.

दयानंद विहार, जय-जय कॉलोनी,पूर्वी दिल्ली

आर्यवीर दल गोविन्द पुरी शाखा

आर्यसमाज दर्शनपुर, कानपुर उ.प्र.

दिल्ली आर्य प्रतिनिधिसभा द्वारा बाढ़ग्रस्त लोगों को बांटे गए वस्त्र एवं आवश्यक सामग्री

यह सर्वविदित है कि अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 की तैयारियों को लेकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य लगातार अत्यंत व्यस्त है। लेकिन कोई भी आपदा किसी की व्यस्तताओं को देखकर कभी नहीं आती, दिल्ली में यमुना का जलस्तर बढ़ा, आसपास की कॉलोनी में रहने वाले लोगों को परेशानी होना स्वाभाविक सी बात थी, आर्य समाज ने देखा की हमारे पास में ही लोग बाढ़ से परेशान हैं, अत: दिल्ली सभा के कार्यकर्ता पहुंच गए बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में और लोगों को वस्त्र आदि वितरित किए गए । जिससे उनको राहत प्राप्त हो सके। क्योंकि आर्य समाज का 150 वर्ष का इतिहास रहा है कि जब-जब किसी भी प्रकार की आपदा मानवजाति के सामने आई है, तब तब आर्य समाज में आगे बढ़कर सेवा और सहयोग के लिए अपने हाथ आगे बढ़ाए हैं।

दयानंद इंटर कॉलेज, बिंदकी, फतेहपुर उ.प्र.

जय-जय कॉलोनी, शिव विहार

जय-जय कॉलोनी, कीर्ति नगर

साप्ताहिक स्वाध्याय

महर्षि दयानन्द की कुछ प्रेरक शिक्षाएं

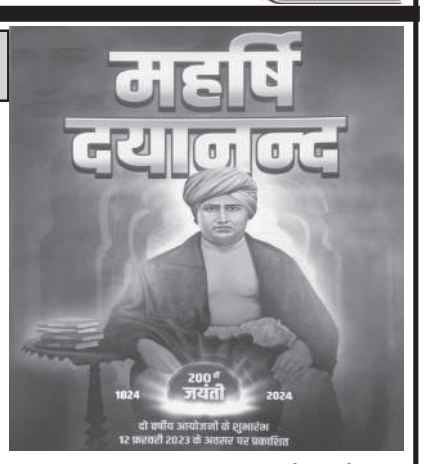

गतांक से आगे-

प्रधानमंत्री के विशेष गुण : राजा उसी को कहते हैं जो शुभ गुण, कर्म, स्वभाव से प्रकाशमान, पक्षपात रहित न्यायधर्म का सेवी, प्रजाओं में पितृवत् वर्ते और उनको पुत्रावत मान के उनकी उन्नति और सुख को बढ़ाने मे सदा यत्न करे।

-स्वमन्तव्यामंतव्य

आपसी फूट का दुष्परिणाम: आर्यो की आपस की फूट और ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के कारण दूसरे वर्ण के लोगों को वेद नहीं पढ़ाए, परिणाम स्वरूप हमारे धर्म के इतने खण्ड हो गए हैं कि अब यह जानना कठिन हो गया है उनमें से कौन-सा ठीक है।

-(महर्षि दयानन्द जीवन चरित पृष्ठ 298)

आपसी फूट : चक्रवर्ती राज्य का नाश उस समय तक नहीं होता, जब तक कि आपस में फूट न हो।

-(पूना प्रवचन (उपदेश मंजरी) पृष्ठ 83)

अस्पृश्यता और भेदभाव से देश की हानि: इसी मूढ़ता से इन लोगों ने चौका लगाते-लगाते विरोध करते-करते सब स्वातंत्रय, आनन्द, धान-राज्य, विद्या और पुरुषार्थ पर चौका लगाकर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं और इच्छा करते हैं कि कुछ पदार्थ मिले तो पकाकर खावें। परन्तु वैसा न होने पर जानो सब आर्यावर्त देश में चौका लगाकर सर्वथा नष्ट कर दिया है।

- सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ- 250

कर व्यवस्था के दोष : सरकार कागद (स्टाम्प) बेचती है। और बहुत सा कागजों पर धन बढ़ा दिया है इससे गरीब लोगों को बहुत क्लेश पहुंचता है। सो यह बात राजा को करनी उचित नहीं क्योंकि इसके होने से बहुत गरीब लोग दु:ख पाकर बैठे रहते हैं। कचहरी में बिना धन के कोई बात होती नहीं। इससे कागजों के ऊपर जो बहुत धन लगाना है सो मुझको अच्छा मालूम नहीं देता। इसको छोड़ने से ही प्रजा में आनन्द होता है।

-सत्यार्थप्रकाश (प्रथम संस्करण- पृष्ठ- 348)

व्यायाम की प्रेरणा : जब 16 वर्ष का पुरुष होय तब से लेके जब तक वृद्धावस्था न आवे तब तक व्यायाम करे। बहुत न करें किन्तु 40 बैठक करे और 30 वा 40 दण्ड करे। कुछ भीत खम्भे वा पुरुष से बल करे, फिर लोट करे। उसको भोजन से एक घंटा पहिले करे, सब अभ्यास जब कर चुके उससे एक घंटा पीछे भोजन करे, परन्तु दूध जो पीना होय तो अभ्यास से पीछे शीघ्र ही पीवे। उससे शरीर में रोग न होगा, जो कुछ खाया वा पिया सो सब परिपक हो जाएगा, सब धतुओं की वृद्धि होगी तथा वीर्य की भी अत्यन्त वृद्धि होती है, शरीर दृढ़ हो जाता है और हड्डियां पुष्ट हो जाती हैं। जठराग्नि शुद्ध प्रदीप्त रहता है और सन्धि से सन्धि हाड़ों की मिली रहती है अर्थात् सब अंग सुन्दर रहते हैं। परन्तु अधिक न करना।

पदार्थ विद्या के सम्बन्ध में : यज्ञ उसको कहते हैं कि जिसमें विद्वानों का सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात रसायन जो कि पदार्थ विद्या उस से उपयोग और विद्यादि शुभगुणों का दान अग्निहोत्रादि जिनसे वायु, वृष्टि, जल, औषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुँचाना है, उसको उत्तम समझता हूँ।

-स्वमंतव्यामंतव्य

प्रजातन्त्र : मनुष्यों को चाहिये कि जो सबसे अधिक गुण, कर्म और स्वभाव तथा सबका उपकार करनेवाला सज्जन मनुष्य है, उसीको सभाध्यक्ष का अधिकार देके राजा माने अर्थात् किसी एक मनुष्य को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देवें, किन्तु शिष्ट पुरुषों की जो सभा है, उसके आधीन राज्य के सब काम रखें।

-ऋग्वेद- मण्डल ॥ सूक्त 77 मन्त्र 3

प्रजा को राजा चुनने का निर्देश: प्रजाजनों को यह उचित है कि आपस में सम्मति कर किसी उत्कृष्ट गुणयुक्त सभापति को राजा मान कर राज्य-पालन के लिये कर देकर न्याय को प्राप्त हों।

-यजुर्वेद- अध्याय 6 मन्त्र 27

राजा की योग्यता : वही राजा होने योग्य है जिसको समस्त प्रजानन स्वीकार करें।

-(ऋग्वेद 2 /1/8)

स्वतन्त्र राजा से राष्ट्र की हानियां : प्रजातंत्र पर महर्षि- जैसे सिंह व माँसाहारी हष्ट-पुष्ट पशु को मार कर खा लेते हैं, वैसे स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है। अर्थात् किसी को अपने से अधिक नहीं होने देगा। श्रीमान् को लूट-खसोट अन्याय से दण्ड दे के अपना प्रयोजन पूरा करेगा।

-(स. प्र., छठा समुल्लास, पृष्ठ. 125)

क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
WWW.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Some Inspiring Teachings of Maharishi Dayanand

Continue From Last Issue

Swadeshi's message : If foreigners behave and rule in the country, then nothing else can happen without poverty and misery.

- Satyarth Prakash Dasham Samullas Page- 251

Cow Protection Message : Oh king, just as the sun pleases all beings by slaying a cloud and causing it to fall to the ground. In the same way, kill those who kill cows and make other animals happy continuously.

-Rigveda Bhasya 1/21/10

Glory of the farmer : Those people, have about the knowledge, those who know the qualities of the land and know how to use it, they can rule the whole earth by getting immense power.

-Rigveda Bhasya 1/60/5

Patriotism : We all must work to gether for the progress of our country. which provided us with all whatever was neccessary for our body and still it is giving us all that and will be giving us in future also, sacrificing our body, mind, soul and property.

- Satyarth Prakash 11th Samullas

Sanskrit is the root of all languages : Sanskrit is the root of all the languages of the word. When Sanskrit words are used in other language those are called Apabhransha.Then the languages of the country are born from Apabhransha. Like pot from the word 'Ghat', Ghee from the word 'Ghrita', milk from the word 'Dugdh', Nayan from the word 'Naveen', eye from the word 'Akshi', ear from the word 'Karna', nose from the word 'Nasika'. Tongue from the word 'jihva', mother from the word 'matar', you from the word 'yuyam', we from the word 'vayam', God (lavak) from the word 'gudh', etc. should be understood.

The Post of the king shold not be regarded Hereditary, but he should be elected by the people : This chairman or assembly president should not be hereditary, but 'elected' or appointed to this post by the people (public).

-Rigveda Bhashya Dharm of the King and he Public : "...Aryans had a nice tradition. No culprit was considered as culprit, who had committed some rather it was considered fault of the President or the councillor of the Assembly or Judge, who had allowed the crime to be done. That's why they used to make a lot of effort in true justice, due to which injustice was never done in the court of Aryavarta. And wherever it happened, they used to blame the same Judges. This is the Principle of all Aryans. There is no doubt that the Aryans have ruled the geography for crores of years according to these Vedas and Shastras.

(In brief, the subject of Rajprajadharma)22 Source- Rigveda Bhashya- bhumika

Special qualities of Prime Minister : He is called be King one who has auspicious qualities, deeds, is bright by nature, dose of justice without bias, works like a Father among the people and considers them as his sons, and daughtes. He always tries to enhance their progress and happiness.

-Swamantvyamantvya

Side effects of discord : Due to the discord between the Aryans and the Brahmins who did not teach the Vedas to the people of other varnas because of their selfishness the result our Dharm has become so divided that now it has become difficult to know which of them is correct.

(Maharshi Dayanand biography page 298)

Mutual Infighting : The Chakravarti kingdom is not destroyed until there is no division among themselves.

(Poona discourse (Upadesh Manjari) page 83)

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

विज्ञापन

सुयोग्य आर्य वर चाहिए

जनकपुरी दिल्ली के प्रतिष्ठित आर्य परिवार (अग्रवाल) की सुयोग्य कन्या जन्म-मई 1996, कद 5 फुट 4 इंच, M.A., M.Ed., दिल्ली विश्वविद्यालय से PHD (अध्ययनरत), वार्षिक आय लगभग 5 लाख, गौर वर्ण, सरल स्वभाव, शुद्ध शाकाहारी, पेंटिंग कला में निपुण, स्वयं का पेंटिंग स्टूडियो, आत्मनिर्भर, स्वयं की कार, के लिए शुद्ध शाकाहारी, मद्यपान/धूम्रपान रहित, 10-15 लाख वर्षिक आय वाला, सुंदर, उच्च शिक्षित, केवल नौकरी वाला आर्य वर चाहिए, जो जनकपुरी दिल्ली में हमारे निवास के निकट रहने को इच्छुक हो।

इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें- **87440 64158**

पृष्ठ 2 का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2025.....

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में प्रतावित एक रूपीय विराट यज्ञ में दिल्ली एनसीआर की हजारों स्त्रियां और बच्चे भी आहुति देंगे, वे केवल आहुति ही नहीं देंगे बल्कि वेद मंत्रों का पाठ भी करेंगे, यज्ञ की व्यवस्था में भी सहयोगी बनेंगे। अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का यह यज्ञ बड़ा ही ऐतिहासिक होगा, इसमें भाग लेने वालों की संख्या विशाल होगी। इसके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के धर्माचार्य, संवर्धकों ने यज्ञ प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन पिछले कई महीनो से शुरू किया हुआ है, जिसमें आर्य विद्यालयों में जा जाकर एक रूपीय यज्ञ की विधि सिखाई जा रही है। जिससे जब यज्ञ का आयोजन हो तो उस समय सभी यज्ञ कर्ताओं की वेशभूषा, सभी का कतारबद्ध बैठने का तरीका, आचमन, प्रार्थना उपासना मंत्रों का पाठ, अग्न्याधान, समिधा दान, घी और सामग्री चढ़ाने की विधि सबका एक ही रूप होवे, सब लोग यज्ञ करते हुए एक समान ही व्यवहार करें, सबका एक ही लक्ष्य हो केवल और केवल यज्ञ करना, यज्ञ करना और यज्ञ करना। तभी एक रूपीय यज्ञ का प्रेरक स्वरूप बनेगा, तभी यह यज्ञ एक प्रेरणा का इतिहास बनेगा।

अत: आइए अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आयोजित होने वाले एक रूपीय विशाल यज्ञ के हम साक्षी अवश्य बनें, किन्तु इसके साथ ही सपरिवार, इष्टमित्रों सहित सर्वकालिक यज्ञशाला में विद्वानों के ब्रह्मत्व में यज्ञ में आहुति दें, यज्ञ का दूसरा चरण विद्वानों की संगति करें, और अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025, दिल्ली के आयोजन में दान देकर पुण्य अर्जित करें। **-संपादक**

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली ऐतिहासिक रूप से भव्य, सुव्यवस्थित एवं सफल बनाने हेतु

दिल खोलकर दान दें

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 को ऐतिहासिक रूप से भव्य, सुव्यवस्थित, सफल बनाने के लिए समस्त आर्यसमाजों, प्रान्तीय सभाओं, आर्य प्रतिष्ठानों, शिक्षण संस्थानों, आर्य परिवारों एवं औद्योगिक घरानों से सहयोग की अपील की जाती है। कृपया दिल खोलकर दान दें।

अपनी दानराशि का सहयोग **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें अथवा निम्नांकित बैंक खाते में सीधे जमा कराएं। स्कैन कोड द्वारा भी दान राशि प्रदान की जा सकती है। कृपया दान राशि जमा कराते ही डिपोजिट स्लिप/स्क्रीन शॉट **9540040388** पर व्हाट्सएप्प भेजें, जिससे आपको तत्काल दान की रसीद भेजी जा सके।

Delhi Arya pratinidhi Sabha
A/c No. 910010008984897 IFSC:UTIB0002193
Axis Bank, Connaught Place, New Delhi

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली भव्य स्मारिका का प्रकाशन : वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों महानुभावों से निवदेन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जयन्ती वर्ष एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों -ज्ञान ज्योति महोत्सव के समापन के रूप में आयोजित **'आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मलेन, दिल्ली- 2025'** के अवसर पर प्रकाशित होने वाली **भव्य स्मारिका हेतु** वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों से आर्य समाज के अनछुए विषयों, समसामयिक विषयों एवं आर्य जगत की महान विभूतियों जिनके कार्यों को आजतक किसी ने नहीं जाना-पहचाना उनकी स्मृतियों को दृष्टिगत रखते हुए लेख आमन्त्रित किए जाते हैं।

इस सम्बन्ध में समस्त वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों महानुभावों से निवेदन है कि अपने लेख ए-4 पेपर पर बाएं साईड में कम से कम 2 इंच का हाशिया छोड़कर स्पष्ट अक्षरों में लिखकर या टाईप कराकर निम्न पते पर भेजें या ईमेल करें।

स्मारिका संयोजक
आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001 **Email:aryasabha@yahoo.com**

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

1 पुरस्कार : 1 लाख, 2 पुरस्कार : 51 हजार, 3 पुरस्कार : 31 हजार, 4 पुरस्कार : 51 सौ, पुरस्कार : 2100 नकद, छठा पुरस्कार : 1000 नकद, सातवां पुरस्कार : 500/- रुपये नकद

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 8 सितम्बर, 2025 से रविवार 14 सितम्बर, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 11-12-13/09/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 10 सितम्बर, 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों का समापन

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025

स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-110085

प्रतिष्ठा में,

महासम्मेलन कार्यालय द्वारा विशेष सूचना

- व्यवस्था और सुविधा की दृष्टि से सभी महानुभावों से निवेदन है कि वे 30 अक्टूबर 2025 को किसी भी समय दिल्ली पहुंचने वाली ट्रेनों में आरक्षण करवाएं।
- महासम्मेलन का कार्यक्रम 2 नवम्बर की रात्रि तक चलेगा अत: अपनी सुविधानुसार 2 नवम्बर की रात्रि अथवा 3 नवम्बर को वापस जाने का आरक्षण करवा सकते हैं।

★ समस्त आर्यजन सम्मेलन में पधारने से पूर्व अपना पंजीकरण अवश्य कराएं। पंजीकरण हेतु लॉगइन करें -
www.aryamahasammelan.com

महासम्मेलन सम्बन्धी आधिकारिक जानकारी हेतु वेबसाइट देखें।
सभा द्वारा संचालित आधिकारिक व्हाट्सएप चैनल एवं टेलीग्राम चैनल से जुड़ें।

व्हाट्सएप चैनल tinyurl.com/aryasamajwa
QR कोड स्कैन करें
टेलीग्राम चैनल @thearyasamaj

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025
भव्य स्मारिका का प्रकाशन

समस्त आर्यजनों, संस्थाओं/आर्य समाजों/पारिवारों से विज्ञापन सहयोग आमन्त्रित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2025 दिल्ली के अवसर पर भव्य स्मारिका का प्रकाशन किया जाएगा। इस स्मारिका के लिए समस्त आर्यजनों, संस्थाओं, आर्यसमाजों एवं आर्य परिवारों से विशेष विज्ञापन सहयोग आमन्त्रित किए जाते हैं। यदि आप अपना कोई शुभकामना सन्देश विज्ञापन, अपनी संस्था/आर्य समाज की जानकारी अथवा अपने माता-पिता, सगे-सम्बन्धी का परिचय या अपने परिवार के सम्बन्ध में सामग्री प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो विज्ञापन के रूप में अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि और कार्य का परिचय दे सकते हैं। विज्ञापन दरें इस प्रकार हैं-

1. पूरा पृष्ठ (रंगीन)	50,000/-	2. आधा पृष्ठ (रंगीन)	25,000/-
3. पूरा पृष्ठ (B/W)	30,000/-	4. आधा पृष्ठ (B/W)	15,000/-
5. आवरण (अन्दर) (रंगीन-पृष्ठ 2-3)	2,50,000/-	6. अन्तिम आवरण (रंगीन-पृष्ठ 4)	2,50,000/-

विज्ञापन प्रकाशित कराने या अधिक जानकारी के लिए '**स्मारिका संयोजक**', 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 को लिखें/9311721172 पर सम्पर्क करें या aryasabha@yahoo.com पर ई-मेल करें। - **संयोजक**

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — सत्यार्थ प्रकाश — सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹60
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹120 प्रचारार्थ मूल्य ₹80
पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 — मुद्रित मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹120
उपहार संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹250 प्रचारार्थ मूल्य ₹160
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹300 प्रचारार्थ मूल्य ₹200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह